

---

साङ्गी विरासत

पुस्तिका सीरीज—47

उत्तराखण्ड क  
गढ़वाल लोकगीत

(छबीलो गढ़वाल मेरु, रंगीलो कुमाऊँ)

संकलन : सुरेंद्र रावत

---

उत्तराखण्ड क गढ़वळि लोकगीत

प्रकाशक :

**isd इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,

62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका

नई दिल्ली-110067

टेलीफोन 011-46025219, टैलीफैक्स 011-26177904

ईमेल : [notowar.isd@gmail.com](mailto:notowar.isd@gmail.com), वेबसाइट : [isd.net.in](http://isd.net.in)

प्रकाशन वर्ष : 2011

केवल सीमित वितरण के लिए

उत्तराखण्ड क  
गढ़वाल लोकगीत

(छबीलो गढ़वाल मेरु, रंगीलो कुमाऊँ)

संकलन : सुरेंद्र रावत

## अपनी बात

उत्तराखंड की संस्कृति में लोकगीतों की समृद्ध परंपरा रही है। लोकजीवन से जुड़ी यह परंपरा जनमानस में रची-बसी, यत्र-तत्र बिखरी हुई है। उसी को सहेजने का एक छोटा सा प्रयास है उत्तराखंड के गढ़वाळी लोकगीतों का यह संकलन।

संकलन का उद्देश्य लोकगीतों को सहेजना मात्र नहीं है, बल्कि यह एक सोच है उस विरासत के लिए जो हम सबकी साझी है। खासकर ऐसे दौर में जब हम अपनी जड़ों से कटकर, विमुख होते जा रहे हैं साझी विरासत के उन मूल्यों से जिनके बिना पहले समाज का ह्रास होना शुरू होता है और फिर धीरे-धीरे समाज को जोड़ने वाली साझा संस्कृति विलुप्ति की कगार पर आ जाती है। इसी के साथ इंसान को इंसान से काटने वाली उपभोगतावादी संस्कृति समाज पर हावी हो जाती है। ऐसे में साझी विरासत के इस रूप (लोकगीत) का संरक्षण व संवर्द्धन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी सोच के साथ इस दिशा में हमारा एक और कदम। पुस्तिका उद्देश्य की पूर्ति करेगी, इसी आशा के साथ प्रयासरत।

## आभार अभिव्यक्ति

इस पुस्तिका के लिए सर्वप्रथम हम श्री चंद्रसिंह राही (लोकगायक) के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने परामर्श से इस संकलन के संपादन में योगदान दिया। साथ ही डॉ. बिहारीलाल जलंधरी (भाषाविद) व श्री दिनेश ध्यानी को भी हम धन्यवाद ज्ञापित करते हैं जिन्होंने समय-समय पर अपना सहयोग दिया व इन लोकगीतों के भावार्थ को बांधने में महत्ती भूमिका निभाई।

—सुरेंद्र रावत

## विषय सूची

1. मांगळ (विदाई) गीत.....	7
2. सौंण-भादौ का बादलू सूणा.....	8
3. फूली जालो कांस—खुदैड़ (कारुणिक) गीत.....	9
4. राडा की रडवाड़ियों (झुमैला).....	10
5. रात घनघोर मांजी.....	11
6. भादौ की अंधेरी झकझोर (विरह गीत).....	12
7. कुयेड़ी—सावन ऋतु का लोकगीत.....	13
8. बारहमासा गीत.....	14
9. ठण्डू चला दी.....	15
10. बीरा.....	16
11. घास काटीक.....	17
12. फूलदेई—बसंत ऋतु का लोकगीत.....	18
13. मेरी भग्यानी बो (छोपती गीत).....	19
14. होली लोकगीत.....	20
15. होली (लोक-नृत्यगीत).....	21
16. हिट बळदा सरासरी रे.....	22
17. सबासी मेरा मोती ढांगा.....	23
18. दाथी उठो दाथी (श्रम लोकगीत).....	24
19. श्रमदान.....	25
20. नैंडाळी पैय्याँ जामी (थड़या लोक-नृत्यगीत).....	26
21. घिंगर की डाळी.....	27
22. घुगूती बासूती—1.....	28
23. घुगूती बासूती—2.....	29
24. कमलू जवान ह्वे ग्याई (बद्दी गीत).....	30
25. भारत को गीत जी (सामयिक लोकगीत).....	31
26. वीर सुमन.....	32
27. सतपुली.....	34
28. गौं की सारी.....	36
29. सरसू.....	38
30. पटखाई में छूड़ा.....	39
संदर्भ सूची.....	40

## मांगळ (विदाई) गीत

काळा डांडा पीछा, बाबा जी काळी छ कुयेड़ी।  
बाबा जी यखुलि मैं लगदी छ डैर।।  
यखुलि यखुलि मि कनकै कि जौलू बिरणा बिदेश।  
अगनैई द्यूलो बेटी, त्वेई सकील जनीत।।  
पिछनई द्यूलो बेटी, त्वे हस्ती व घोड़ा।  
त्वे तैं मेरी धिया लाडी यखुलि नि भेजू।।  
अगनैई द्यूलो लाडी त्वे तैं दास अर दासी।  
पिछनैई द्यूलो त्वे तैं गायों का गुठ्यार।।  
त्वे मेरी धिया ब्वे यखुलि नि भेजू।  
तब द्यूलो मेरी लाडी गुप्त भण्डार।।  
पिछनैई द्यूलो लाडी भैस्यूं का खरक।  
भैस्यों का खरक लाडी बखर्यों की तांदी।।  
त्वे मेरी लाडी, सांकी यखुलि नि भेजू।  
त्वे दगड़ आला ब्वे तेरा दीदा भुला।।  
त्वे द्यूलो लाडी मी सान्दण की डोली।  
डाण्डा पीछा बाबाजी काळी च कुयेड़ी।।  
यखुलि यखुलि बाबा कनक्रे की जौलो...

**भावार्थ**—यह विदाई के समय का लोकगीत है जिसमें करुणा प्रधान होती है। बेटी (वधू) व पिता के हृदय की करुणा विदाई के इस मांगळ गीत में व्यक्त है। पिता के गले लगते हुए बेटी कहती है कि काले पर्वत के पीछे जहां मेरा ससुराल है, मुझे जाते हुए डर लगता है। विदेश में जहां अपना कोई नहीं है, मैं अकेले कैसे जाऊंगी? पिता बेटी को समझाते हुए धैर्य बंधाता है और कहता है कि तू यूँ न घबरा। तुझे छोड़ने तेरे भाई-बंधु जाएंगे।

## सौंण-भादौ का बादलू सूणा

सौंण-भादौ का बादलू सूणा  
बरखा ना कयाँ मिन मैत जाण।

मांजी ना म्यारा सास मा राणा  
बरखा ना कयाँ मिन मैत जाणा।

कख होली मेरी उचि-निसि डांडी  
कन होली मेरी दगड्या मैत की  
हे लम्बा बाटा तू छोटू ह्वेजा  
हे छोटा दिन तू टुलो ह्वेजा।

ऐ गे घीया-संगरांदी को मैना  
कखड़ी-मुंगरी खाणा का दिना  
मैत की सबि भलि-बुरि चीजी  
खाणा मां मीठी ही लगदीना।

सूरज दाता! रात न कैयी  
सासू ना निथर योही बानो पाणा।

मी तैं रुलैकी तुमना क्या पाणा  
बरखा ना कयाँ मिन मैत जाणा।

छै मैना पैली बुबा जी की बरसी मा  
सासू जी ना मैत मी नी पठ्याऊं  
इकलौता भैजी को आज ब्यो छ  
पर मी अबि तैं बि मैत नी गंऊ।

**भावार्थ**—सावन-भादों के इस मौसम में एक स्त्री ससुराल न जा पाने की पीड़ा में अंदर-ही-अंदर घुल रही है। आशा की डोर में वह अपनी व्यथा प्रकृति से कह रही है और उससे गुहार लगा रही है। हे बादलों! तुम न बरसना मुझे अपने मायके जाना है। हे रास्ते तू छोटा हो जा और हे छोटे दिन! तू बड़ा हो जा। सूरज! तू आज रात मत करना नहीं तो मेरी सास मुझे नहीं जाने देगी। मैं छह महीने पहले अपने पिताजी की बरसी में भी नहीं जा पाई थी और आज मेरे इकलौते भाई की शादी है, पर मैं अभी तक भी यहीं ससुराल में हूँ। हे बादलों! तुम्हें मुझे रूलाकर क्या मिलेगा, तुम बरसात मत करना।

## फूली जालो कांस—खुदैड़ (कारुणिक) लोकगीत

फूली जालो कांस ब्वे, फूली जालो कांस  
मेल्वडी बासली ब्वे, फूली गैं बुरांस  
मौळि गेन डाळी ब्वे, हैरी ह्वेन डांडी  
गौं कि दीदी भुलि मैतु आई गेन  
निमैतुड़ी ब्वे तरसणी होला।

**भावार्थ**—फलारी (बसंत) महीने के आते ही मायके तक न पहुंच सकने वाली युवती के हृदय-विदारक शब्द इस गीत में व्यक्त हैं। माँ ! बसन्त का महीना आ गया है। वनों में फूल खिलेंगे, पहाड़ की चोटियों पर बुरांस के फूल खिल गये हैं। सम्पूर्ण प्रकृति लहलहा उठी है। सारे वन-उपवन हरे-भरे हो गये हैं। मायके आने की ऋतु आ गई है। ऐसे में गांव की सभी छोटी-बड़ी बहनें मायके आ गई हैं। केवल मैं ही ऐसी अभागिन हूँ जो मायके का रास्ता देख रही हूँ।

## राडा की रडवाड़ियों ( झुमैला )

राडा की रडवाड़ियों म्बारी रुणाली, झुमैलो ।  
झपन्याली डाल्यों हिलांस बाँसली, झुमैलो ।  
कांदू मा हलसुगी लीक हल्या खेतू मा जाला, झुमैलो ।  
जौंका होला भाई, मैत बुलाला, झुमैलो ।  
मेरा मैत्यों की पुंगड़ियों का मेंडा, झुमैलो ।  
फ्यूलीन पिंगला ह्वैना रिंगला, झुमैलो ।  
मेरा मैत्यों का डांडा कांठा, झुमैलो ।  
लाल डोरा बुरांस का सजला, झुमैलो ।

**भावार्थ**— झुमैला गीत में हर पंक्ति में झुमैला शब्द को दुहराया जाता है। गांव में कन्याये तथा नव-विवाहिताये मंडल बनाकर प्रायः संध्या के समय इन गीतों को गाती हैं और नाचती हैं। झुमैला गीतों में बसंत ऋतु की शोभा के वर्णन के साथ मायके की स्मृति के करुण स्वरों की भी अभिव्यक्ति होती है। सरसों के खेत में भौंरे मंडरा रहे होंगे, घने वृक्षों में हिलांस की आवाज गूँज रही होगी, हलिया हल थामे खेतों में जा रहे होंगे। जिन स्त्रियों के भाई होंगे वे अपनी बहनों को मायके बुलायेंगे। मेरे मायके में भी पीले फूलों ने अपना रंग बिखेर दिया होगा और पर्वत शिखरों पर बुरांस के फूलों से लाल रंग सज रहा होगा।

## रात घनघोर मांजी

रात घनघोर मांजी रात घनघोर,  
बेटी नी बेवौण मांजी दीप डांडा पोर।  
आयूं छ खायूं छ, आयूं छ खायूं छ,  
जा बेटी सौरयास तेरो जवैं आयूं छ।  
पेइ छ सराब मांजी, पेइ छ सराब ,  
सैसर नी जाण मांजी, जवैं छ खराब।  
दली जाली दाल मांजी, दली जाली दाल,  
जवैं क्या बोन्न मांजी, मेरो आयूं छ काल।  
मारीत मलेउ मांजी, मारीत मलेउ,  
सैसर नी जाण मांजी, न बणौ कलेउ।  
कोठारी का खाना मांजी, कोठारी का खाना,  
इन्नी मरी जाण मांजी, नणदू का बाना।  
गुलैरी की गारी मांजी, गुलैरी की गारी,  
सासुजीन पकड़ी मांजी, जिठाणीन मारी।  
घोड़ी की कमर मांजी, घोड़ी की कमर,  
कसीकी बितौलू मांजी, लौंडिया उमर।  
पाणी को गिलास मांजी, पाणी को गिलास,  
तुमू दरु ह्वैगे मांजी, मैं लगदी निसास।  
सुखी न संपत्ति नी मांजी, रात घनघोर,  
वियोणू नी आइ मांजी, दीप डांडा पोर।

**भावार्थ**—पहाड़ों में बहू बेटियों के अकेलेपन के साथी हैं लोकगीत। उनमें स्त्रियों की खुशियां, अवसाद और तकलीफें हैं। वे करुण गीत पहाड़ी स्त्री की आत्मा की पुकार हैं। ऐसी ही कुछ पुकार एक विवाहिता स्त्री द्वारा इस लोकगीत में वर्णित है। रात घनघोर है, हे मां! दीप डांडे के पार बेटी को न ब्याहना। ओ बेटी! ससुराल जा, तेरा पति आया हुआ है। मां! मैं ससुराल नहीं जाऊंगी वह खराब है, उसने शराब पी है। मैं ससुराल नहीं जाऊंगी, मां! मेरा कलेवा मत बना। ननदों के कारण मैं किसी दिन मर जाऊंगी, सास मुझे पकड़े रहती है और जेतानी मारती है। तुम तो दूर हो, मां! मुझे तुम्हारी याद आती है। न सुख है, न संपत्ति। रात घनघोर है, अभी तक दीप डांडे के पार से सुबह का तारा नहीं निकला।

## भादौ की अंधेरी झकझोर (विरह गीत)

भादौ की अंधेरी झकझोर,  
न वास, न वास, पापी मोर।  
ग्वैरी की मुरली तू तू बाज,  
भैंस्यू की घांड़ून डांडू गाज।

तुम तैं मेरा स्वामी कनी सूझी,  
आंसुन चादरी मेरी रूझी।  
तुमारा बिना क्या लाणी खाणी,  
मन का मन मा रैन गाणी।

छलबलारण्या रौ भरेये पाणी,  
कब आला स्वामी करदू गाणी ?  
अब डेरा ऐ जावा तुम स्वामी,  
आंख्यों की रोई नी सकदू चामी।

**भावार्थ**— इस लोकगीत में एक स्त्री अपने पति का विकल इंतज़ार कर रही है। बारिश की झड़ी लगी है और उसके मन में एक सन्नाटा है। और उस सन्नाटे में उसके मन में जो भाव उभर रहे हैं उसी को इस लोकगीत में संजोया गया है। भादों का अंधेरा छाया है, हे मोर! तू मेरे पास न बोल-न बोल। चरवाहों की मुरली बज रही है। भैंसों की घंटियों से पर्वत गूँज रहा है। तुम्हें ये कैसी कठोरता सूझी, आंसूओं से मेरी धोती भीग गई है। तुम्हारे बिना क्या खाना, क्या पहनना? मन की कल्पनाएं मन में रह गई हैं। पानी से भरकर तालाब लबलबा रहे हैं, स्वामी तुम कब आओगे? मैं दिन गिनती रहती हूँ अब घर आ भी जाओ स्वामी। अब मैं अपने आसुंओं को और अधिक दिन तक नहीं रोक सकती।

## कुयेड़ी—सावन ऋतु का लोकगीत

सुणा मेरा स्वामी जी, सावण आयी,  
रूण झुणया बरखा, घनघोर लायी।  
दौड़ी-दौड़ी कुयेड़ी, डांडों मा आयी,  
कुयेड़ी नी स्वामी, अंधियारो छायी।  
कुयेड़ी देखीक, जिऊ खुदी आयी,  
कनु पापी आँखी, आँसू भरि लायी।

**भावार्थ**—यह सावन ऋतु का लोकगीत है। इस गीत में सावन मास के मौसम के वर्णन के साथ एक स्त्री के मन में उठ रहे भावों को अभिव्यक्ति मिली है। घनघोर बारिश हो रही है। कुहरा ऐसा घना छाया है कि चारों तरफ अंधेरा हो गया है और उसे देखकर मुझे तुम्हारी याद सताने लगी है। सावन का यह कैसा महीना है जो मेरी आँखों में आँसू ले आया है।

## बारहमासा गीत

आयो मैनो चैत को, हे दीद्यों, हे राम ।  
उठीक फुलारी झुसमुस, लगी गैन निज काम,  
मैनो आयो बैसाख को, सुख की नी आस,  
ग्यों जौ का पूलों मुड़े, कमर पड़ीगी झास ।  
आयो मैनो जेठ को, भक्को हँगे भौत,  
स्वामी मेरा घर नी, समझी रयूं में मौत ।  
मास पैलो बसगाळ को, आयो यो आसाड़,  
में पापणी झुरि-झुरि मरयूं, मास रयो न हाड़ ।  
मास दूसरो बसगाळ को, आयो स्यो सौण,  
चिट्टी नी पतरी ऊँकी कुजाणो कब घर औण ।  
मास आयो भादौ को, डाँड्यूं कुयेड़ी लौंकी,  
तेरी खुद मा स्वामी जिक्कुड़ी मा बिजुली सी चोंकी ।  
आयो मैनो असूज को, बादल गैन दुरू,  
जोन काँठों मा औँदी, जिया लाग बुरू ।  
आई दिवाली कातिकी, चढे घर-घर तैकू,  
यूं दिन स्वामी का बिना, ज्यू लगदू कैकू ?  
आयो मैनो मंगसीर को, हे बैण्यों, हे राम,  
स्वामी की खुद मा हाड़ रयो न चाम ।  
पूष मास की ठंड बड़ी थर-थर कंपद गात,  
कनि होली भग्यान स्या पति होला जौंका साथ ।  
लगी मैनो माघ को, गौं-गौं छन ब्यो,  
ब्योली आँखी झुकैक, ब्योला से मिलदी स्यो ।  
फागुण मैनो आये, हरी-भरी हँन सारी,  
मी झूरि-झूरि मरियूं एकुला बांदर की चारी ॥

**भावार्थ**—यह एक बारहमासा गीत है। इस बारहमासी गीत में प्रत्येक महीने के वर्णन के साथ-साथ एक स्त्री के मन की कारुणिक वेदना, पति के प्रति उसके प्रेम और उसके वियोग में तड़पन को दर्शाया गया है।

## ठण्डू चला दी

जरा ठण्डू चला दी जरा मटू चला दी।  
मेरी चदरी छुटिगे पिछनै जरा मटू चला दी।  
फाडू च पपीता हो फाडू च पपीता।  
पिछनै छुटिगे प्यारी साड़ी कू लपेता ॥  
मीं बिमार छौंऊं नगीना लिजादी।  
नगीना होसपिटल मा एक्सरा करा दी ॥  
मेरी खून सुखी गयाया बम्बई लिजादी।  
अपणा बम्बै जाकी इलाज करादी ॥  
कळसणी आखूं कू काजळ मंगै दे।  
गोरी मुखड़ी को पोडर मंगै दे ॥  
जरा ठण्डू...।

**भावार्थ**—प्रस्तुत गीत में झंझटों में बंधी पत्नी अपनी सारी परेशानियों को तब पति के सम्मुख रखती है जब वह परदेस से लंबे अंतराल के बाद छुट्टी पर घर लौटता है। दोनों के दोनों गांव के स्थानीय हाट-बाजार में जा रहे हैं और तब पत्नी एक-एक कर अपनी शिकायतें पति को सुनाती है और उनके समाधान के लिए कहती है।

## बीरा

तू हेली ऊंचि डांड्यो मा बीरा  
घस्यारी क भेस मा  
खुद मा तेरी सड़क्यूं पर मी,  
रूणू छौं परदेस मा ।

ऊंचि-निसि डांडी गाड-गदीना,  
हिंसर अर किनोड़ी ला  
तुल-बुल बणि गे होली डाळी,  
ग्वेर दगड्या तोड़ला  
घणी कुळायूं क बीच अर  
बाज की डाली क छैल मा  
बेटी ब्वारी बैठीं होली,  
बैख होला हैल मा  
सर-सर हवा आणी होली  
बदरीनाथ क डांडा की  
मुख म लटुली उडणी होली  
ठंडी हवा ला डांडा की  
पर मी म्वरणू छौं घाम अर  
तीसल ये देस मा  
खुद मा तेरी सडक्यूं पर मी  
रूणू छौं परदेस मा ।

गौड़ी-भैंसी म्वां-म्वां करदी  
रमदी लैंदी जब आली  
ऊंकी गुसैण भांडी लेकी  
गौड़ी-भैंसी पिजाली  
सौण-भादौ क मैना  
जब लोग धाणी पर जाला  
ऊंका जनाना स्वामी कु  
अपणा स्योरों रोटी ल्हजाला  
मूळा की भुजि, प्याज कु साग  
दै की कटोरी भोरीक  
कोदा की अफू कू स्वामी कु  
ग्यूं की रोटी खलाला चोरी की  
पर मी कटणू छौं दिन  
भूक-तीस ला ये देस मा  
खुद मा तेरी सड़क्यूं पर मी  
रूणू छौं परदेस मा ।

**भावार्थ**— उत्तराखंड में चाहे वो गढ़वाल मंडल हो या कुमाऊं या फिर जौनसार ज्यादातर घरों की यही कहानी है कि रोजगार के कारण पुरुषों को परदेश में रहना पड़ता है और साल में होली-दीवाली आदि त्यौहारों पर उनका अपने गांव जाना होता है। इस गीत में परदेस में रहने वाले उस पुरुष की पीड़ा को उकेरा गया है जो उसे रह-रहकर सता रही है और वह अपनी पत्नी को याद करता हुआ धीरे-धीरे अपने पूरे गांव की कल्पना करता है कि इस सुंदर मौसम में वहां की प्रकृति कैसी होगी और वहां क्या-क्या पकवान पक रहे होंगे। साथ-ही-साथ सभी लोगों की दिनचर्या भी उसे याद आती है।

## घास काटीक

घास काटीक प्यारी छैला हे,  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा  
दूदी का नौना की हिंगर गडींच,  
बग्त ह्वेगे घर ऐजा ।

त्यारा मैत का पौणा अयां छन,  
बाच दी सब धै लगाणा छन  
एक बेर हां बोली मन तैं बुझैजा  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

घास का बाना कै भेल गैयी,  
बौड़ी की घर किलै नी ऐयी  
वे भेज लोली! मी बी बतैजा  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

बसग्याली घासे गडोली,  
चुची छोरि त्वेमा गरी हूँयी होली  
अदरोयी अयूं छौ मी मा देजा  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

उचा डांडा बी अछैयी गैना,  
लोगू की ब्वारी घर बौड़ी गैना  
त्वे बिना घर सारो सूनो हुयूंच  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

बरखणी आंखी सौणा-भादौ सी,  
आंसू छन भरिं पाणी रौ सी  
यूं आंसू अफु ऐकी त्वी फूजीजा  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

जै भग्यान का ब्वे-बाबा होला,  
ऊंका सारा ऊ सुख मा राला  
पर हम द्वीयूं को एकलो कुटम छ  
रुमक ह्वेगे घर ऐजा ।

**भावार्थ**— इस लोकगीत में उत्तराखंड के परिवारों में नारी के महत्त्व, उसके कष्टपूर्ण और संघर्षशील जीवन व एकल परिवार की पीड़ा को एक पति के माध्यम से दर्शाया गया है। जिसकी पत्नी ऊंचे पहाड़ों पर घास काटने गई है, लेकिन सांझ डले वह घास काटकर अभी तक वापिस नहीं लौटी। हे मेरी प्यारी छैला! तू घर आ जा। शाम ढलने को आ गई है, लेकिन तू अभी तक नहीं आई है। तू घास काटने किन ऊंचे पहाड़ों पर गई है। घर में तेरा छोटा बच्चा बिना दूध के परेशान है। तेरे मायके से रिश्तेदार आए हैं, तू कम-से-कम एक बार आवाज देकर मन को तो शांत कर दे कि हां तू आ रही है। घासे गडोली (घास का गट्टर) तेरे सिर पर भारी हो रहा होगा। तेरी याद में मेरी आँखें डबडबा रही हैं। इन आँखों के आंसुओं को तू घर आकर शांत कर दे। हे मेरी प्यारी! शाम हो गई है तू घर आ जा, तू घर आ जा।

## फूलदेई—बसंत ऋतु का लोकगीत

फूलदेई फूलदेई फूल संगराद !  
सुफल करो नयो बरस तुमकू भगवान !  
रंगीला-चंगीला फूलीगैं, डाला बोटला ह्या ह्वैगैं ।  
पौन-पंछी ऐन, फूल हंसी रैन  
आयो नयो बरस, आज फूल संगराद ।  
तुम्हारा भण्डारा भर्यान, अन्न-धान फूल्ल्यान ।  
औंदी रयां रितु-मास, फूलदा रयां फूल  
बच्यां रौला हम-तुम, फिर आली फूल संगराद ।

**भावार्थ**—यह बसंत ऋतु का लोकगीत है जो कि प्रकृति की नैसर्गिक छटा के गीत होते हैं। फूलदेई का त्यौहार फूल संक्रांति के दिन नये वर्ष की खुशी में मनाया जाता है। चैत्र मास का पहला दिन मेष संक्रांति का दिन होता है। इसे ही गढ़वाळ-कुमाऊं में फूल संक्रांति (मेष संक्रांति) भी कहते हैं। इसी से संबंधित है यह गीत फूलदेई। फूलदेई फूल संक्रांत आई है। आज से शुरू होने वाले दिन से चारों ओर सफलता हो। रंग बिरंगे फूल खिले हैं, पेड़-पौधे हरे हो गये हैं, चारों तरफ नई आशा और विश्वास का नया वर्ष आज से शुरू हो रहा है। इस फूल संक्रांत से आरंभ होने वाले नये वर्ष में तुम्हारे अन्न और धन के भंडार भरे रहें। अगर हम तुम बचे रहे तो ऐसी ही फूल संक्रांत हर साल आती रहेगी।

## मेरी भग्यानी बो (छोपती गीत)

पोसतू का छुमा, मेरी भग्यानी बौ।  
आज की छोपती, मेरी भग्यानी बौ।  
रै तुमारा जुमा, मेरी भग्यानी बौ।  
घुगूती को घोल, मेरी भग्यानी बौ।  
रुबसी गिचीन, मेरी भग्यानी बौ।  
तु रौनक खोल, मेरी भग्यानी बौ।  
पैरी त सुलार, मेरी भग्यानी बौ।  
द्वि दिन की ज्वानी, मेरी भग्यानी बौ।  
ज्वानी को उलार, मेरी भग्यानी बौ।  
दाली ध्वैती छबीलो, मेरी भग्यानी बौ।  
तेरा बाना ह्वैगे, मेरी भग्यानी बौ।  
सरील को क्रीलो, मेरी भग्यानी बौ।  
काटी जालो घास, मेरी भग्यानी बौ।  
काम करी काज, मेरी भग्यानी बौ।  
ज्यू तुम्हारा पास, मेरी भग्यानी बौ।

**भावार्थ**—छोपती रंवाई-जौनपुर का चहेता प्रणयगीत है। यह मूलतः लोक-नृत्यगीत है और रात के समय में इस नृत्यगीत को गाया जाता है। इन गीतों को गाने के लिए स्त्री-पुरुषों की दो टोलियां बन जाती हैं। इसमें उत्तर-प्रत्युत्तर चलते हैं जिनमें प्रेम की महत्ता पर जोर डाला जाता है। इस गीत में देवर भाभी से छोपती गीत की शुरुआत के लिए आह्वान करता है और कहता है कि आप ऐसा गीत गाएं जिससे सारा वातावरण रंगीन हो जाए। और इसके प्रत्युत्तर में भाभी छोपती को न जानने का बहाना करती है।

## होली लोकगीत

मोरे सांवरे कन्हैया बिनु कैसे खेलूं होरी,  
दिन चारे सखी री अपने बलम को-  
हम सों माँगन दो फागुन के दिन ।  
सुना (साना) सी होला (है), तोला-स दूंगी  
पिया तोला न जाय, पिया न दिया जाय ।  
रत्ती भर घटला (घटेला तो) माशा भर देऊंगी ।  
देऊंगी काट के तोल ।

**भावार्थ**—उत्तराखंड में गाये जाने वाले अधिकतर होली के गीत गढ़वाळी में न होकर गढ़वाळी मिश्रित ब्रजभाषा के गीत हैं । जिनमें ब्रज के शब्दों की ही अधिकता देखने को मिलती है । इन गीतों को टोली में गाया जाता है और टोली गीत गाते हुए गांव-गांव जाती हैं ।

## होली (लोक-नृत्यगीत)

मत जाओ पिया होली आय रही है  
जिनके पिया घर में ही बसत हैं  
तिनकी नारी रंग भरे  
मत जाओ पिया होली आ रही है  
जिनके पिया परदेस बसत हैं  
तिनकी नारी उदास भई  
मत जाओ पिया होली आय रही है  
जैसे नंग के ऊपर मास नहीं  
परदेसी पिया की आस नहीं  
मत जाओ पिया होली आय रही है

**भावार्थ**— इस लोक-नृत्यगीत में एक स्त्री का अपने पति को संबोधित कर परदेस न जाने का आग्रह है।

## हिट बळदा सरासरी रे

हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।  
त्यार भवार मिल बळदा रे अन्न कमै कि खाणा रे॥  
तेरी घाण्डी बाजली बळदा गुणमुण-गुणमुण रे।  
त्यारू गुसैं बीज बुतलो छुणमुण-छुणमुण रे॥  
हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।  
हिट बळदा सरासरी तु नि तोड़ी जोत रे।  
त्यार बांठा कु पीण्डु नि आयो भैंसी लै ग्याया सौत रे॥  
हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।  
तेरी मुसैणी कु भैंसी च प्यारी त्वेमा मेरो सांस रे।  
घार जैकि त्वे मि घूंलू हारू-हारू घास रे॥  
हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।  
हिट बळदा सरासरी पुंगड़ी खूब बाँला रे।  
द्वी का द्वी अन्न कमौला मौज मारी की खौँला रे॥  
हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।  
हिट बळदा सरासरी तिल देंई मा जाणा रे।  
त्यार भवार मिल बळदा देंई भोज खाणा रे॥  
हिट बळदा सरासरी रे, तिल हाळ मा जाणा रे।

**भावार्थ**—गढ़वाळ में कृषि को महत्व दिया जाता है और बिना बैलों के खेतों को जोतना असंभव होता है। बैल कृषि की रीढ़ होता है। प्रस्तुत गीत में इसी महत्व को दर्शाया गया है। कृषक बैल को पुचकारता है कि अपनी चाल बढ़ा क्योंकि तेरे ही सहारे मैं अन्न कमा सकता हूँ। तू जब चलता है तो तेरी घाण्डी (घुंघरू) प्यारे-प्यारे बजते हैं और उन्हीं की चाल में मैं बीज बोता हूँ। शाबास तू ऐसा हल लगा जिससे जुआ न टूटे। तेरे लिए खेत में खाने-पीने के लिए जो लाना था उसे तेरी दुष्ट भैंस चट कर गई, लेकिन तू चिंता मत कर घर जाकर तुझे मैं हरी-हरी घास दूंगा। तू अपनी ऐसी चाल से चल, हम खूब खेती करेंगे। दोनों के दोनों जब परिश्रम करेंगे तो मौज मार कर खाएंगे। खेतों में काम करके फिर तुझे अनाज गाहने के लिए जाना है। तेरी मेहरबानी से मुझे भी अनाज गाहने का दें भोज (विशेष प्रकार का भोजन) मिलेगा।

## सबासी मेरा मोती ढांगा

चिलमी की पीच बे चिलमी की पीच  
हे! म्यरो मोती ऐगे भरी सारी बीच।  
सबसे म्यरा मोती ढांगा, तीले धारू बोला ॥

घोटी जाली हींग बे घोटी जाली हींग  
नौ रुप्या कू मोती ढांगो, सौ रुप्या कू सींग।  
सबसे म्यरा मोती ढांगा, सौ रुप्या कू सींग ॥

जंदरी काखांद बे जंदरी काखांद  
हलस्यूं को नौं सुणीक, लमसट ह्वे जांद।  
सबसे म्यरा मोती ढांगा, लमसट ह्वे जांद ॥

हुका भरे काली बे हुका भरे काली  
उज्याड़ को नौं सूणीक, ढौंडों दींद फाली।  
सबसे म्यरा मोती ढांगा, ढौंडों दींद फाली ॥

बाखरा की सांकी बे बाखरा की सांकी  
कल्योड्यो देखीक बुड्या, कन घुर् योंद आँखी।  
सबसे म्यरा मोती ढांगा, कन घुर् योंद आँखी ॥

**भावार्थ**— यह एक हास्य-व्यंग्य लोकगीत है। जिसमें 'मोती' नामक बैल के माध्यम से आलसी-विलासी मानवों पर व्यंग्य साधा गया है। मेरा बूढ़ा मोती! हरे भरे-खेतों में आ गया है। शाबास मेरे मोती। मेरे मोती का मूल्य बुढ़ापे के कारण मुश्किल से नौ रुपये होगा, परन्तु उसके सींगों में अभी ऐसी चमक-दमक है कि उनका मूल्य सौ से कम नहीं हो सकता। इस बैल में बड़ी विशेषता यह है कि यह हल लगाने का नाम सुनते ही लेट जाता है, परन्तु जैसे ही वह जवान गायों को देखता है तो उसकी आँखों में चमक आ जाती है। दूसरे के खेतों में चोरी-छिपे चुगने की धुन में तो वह पहाड़ों से छलांग लगाने में भी पीछे नहीं रहता। (अलग-अलग क्षेत्रों के हिसाब से इस लोकगीत में घट-बढ़ है।)

## दाथी उठो दाथी ( श्रम लोकगीत)

रिंगळी पिंगळी फसल ह्वेगे दाथी उठो दाथी ।  
दाथी उठो दीदी मेरी, दाथी उठो भुलि मेरी ॥  
धन्य तेरी मिनगत, धन्य तेरी माटी ।  
उठ फसल पकी, फसल दे तू काटी ॥  
दाथी उठो बौजी मेरी दाथी उठो दाथी ।  
छप्प पुंगड़ी भरीनी, सब भरीनी सारी ।  
काटी काटी बांध पूळा आज ज्यू न हारी ॥  
दाथी उठो मांजी मेरी दाथी उठो दाथी ।  
रिंगळी पिंगळी फसल ह्वेगे दाथी उठो दाथी ।  
दाथी उठो दीदी मेरी, दाथी उठो भुलि मेरी ॥

**भावार्थ**—इस लोकगीत में फसल पक जाने के बाद उसे एक साथ मिलकर काटने के लिए आह्वान है। फसल पक कर पीली हो गई है, दाथी (फसल काटने के लिए काम में आने वाला औजार) उठा मेरी दीदी (बड़ी बहन) और भुली (छोटी बहन)। तेरा श्रम धन्य है और धन्य है तेरी माटी। उठ फसल पकी है, फसल को काट। दाथी उठा मेरी भाभी, सब खेत भर गये हैं। काट-काट कर पूले (गडुर) बांध। आज जब फसल पक गई है तो तू हिम्मत न हारना। दाथी उठा माजी मेरी, दाथी।

## श्रमदान

गांवा का पंचू न सोचे बात,  
श्रमदान मा देण हात ।  
हात की साबली हात रैन,  
परवाणा देखीक छक्का छुटी गैन ।  
पाड़ से जुझन्यां एक छन्दा जवान,  
साबली चलौंद जना काबुली खान ।  
जनता न झनुकरे सांसो,  
ये पाड़ तोड़ला हम जनु कांसो ।  
ये काम से न हम मुख मोड़ला,  
पोड़ू तैं हम हातून तोड़ला ।  
घणु की चोटुन पाड़ थर्राए,  
डांडू कांटू मा सड़क आए ।।

**भावार्थ**—इस गीत में श्रमदान के महत्व को दर्शाया गया है। गांव के पंचों ने श्रमदान के महत्व को जानकर यह निर्णय लिया कि हमको अपने लिए स्वयं सड़क बनानी चाहिए। और फिर उस श्रमदान का ही परिणाम उनको अपने यहां सड़क बनने पर प्राप्त होता है।

## नैंडाळी पैय्याँ जामी ( थड्या लोक-नृत्यगीत)

सेरा कि मींडोल्यां, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
दिबताँ कि डाळी, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
कूली की बेडवाळ, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
सेरोँ की ढिस्वाळी, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
चला दीदी भूल्याओं, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
घी दूध धारयोला, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
एक पत्ती ह्ये ग्याय, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
द्विपत्ती ह्ये ग्याई, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
फूटी गेन फांगी, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
द्यू करा धूपाणा, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
कै देव शोभली, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
खितरपाल शोभली, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
दिबताँ क सत्तल, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
क्री घांडा चडौला, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।  
क्री निशाण लगौला, नैंडाळी पैय्याँ जामी ।

**भावार्थ**— यह लोक-नृत्यगीत खुले आंगन का है। इसमें नर्तक समूह गोल घेरे में खड़े होते हैं और टोली के अनुसार दो दलों में बंट जाते हैं व आपस में कमर पर आड़े-तिरछे हाथ डालकर नृत्य करते हैं। इन गीतों की विषय-वस्तु अलग-अलग होती है। इस गीत में उत्तराखंड के लोगों का प्रकृति के प्रति साहचर्य को दर्शाया गया है। पैय्याँ वृक्ष की कोपल खेत के किनारे उग आई है और उसी पैय्याँ वृक्ष की डाली को बढ़ाने के प्रयास में सभी नर्तकियां गीत गाते हुए नाच रही हैं।

## धिंंगर की डाळी

नन ननि धिंंगर की डाळी झुम्पा केला त्वाड़ा दा  
गांव का पधान पूछा डाळी केला त्वाड़ा दा  
सीणू च सुलार सीणू च सुलार दा  
हे मेरी धिंंगर की डाळी हेगे छी फुलार दा  
नन ननि धिंंगर की डाळी झुम्पा केला त्वाड़ा दा  
बूणी जाली माणी दा बूणी जाली माणी दा  
हे मेरी धिंंगर की डाळी हेगे छी गगराणी दा  
नन ननि धिंंगर की डाळी झुम्पा केला त्वाड़ा दा  
खाई जाला आम दा खाई जाला आम दा  
कैल त्वाड़ डाळी मेरी फौंकि का सुदाम दा  
नन ननि धिंंगर की डाळी झुम्पा केला त्वाड़ा दा  
गाड की गंगल्वड़ी दा गाड की गंगल्वड़ी दा  
बाटा का बटोई दीदा तू डाळी न तोड़ी दा  
नन ननि धिंंगर की डाळी झुम्पा केला त्वाड़ा दा

**भावार्थ**— गढ़वाल का जनमानस पर्यावरण के प्रति हमेशा से सचेत रहा है। पर्वतीय नर-नारियों का जितना प्रेम अपनी औलाद व पशु-पक्षियों से रहता है उतना ही प्यार वे पेड़-पौधों से भी करते हैं। प्रस्तुत लोकगीत में छोटे से धिंंगर के पेड़ को किसी ने तोड़ दिया। इस पर कृषक अपनी पत्नी से उसके संबंध में पूछता है कि इसे किसने तोड़ा? इसकी शिकायत ग्राम प्रधान से करो। पौधे की अवस्था फूल आने की होने वाली थी। तमाम आने-जाने वाले राहगीरों को सावधान करना होगा कि वह रास्ते के किनारे के धिंंगरू के अधपके फलों को न तोड़ें और न ही उनकी नाजुक टहनियों को तोड़ें।

# घुगूती बासूती

(बच्चों के लिए घरों में गाया जाने वाला लोकगीत।)

1

घुगूती बासूती  
क्या खैयली  
दूध भात्ति

मीते भी देली  
जूठी छ

माँ कख जयीं छ  
घासम

क्या लेली  
चखुली मरीक

चिल्लापोडी...

2

घुगूती बासूती  
क्या खैयली  
दूध भात्ति

मीते भी देली  
चुलाम

माँ कख जयीं छ  
पानीम

क्या लेली  
बेर/हिस्सर तोडिक

चिल्लापोडी...

**भावार्थ**—गढ़वाळ में दो रूपों में बाल लोकगीत हैं। पहले वे जो बच्चों को सुलाने अथवा उनके मनोरंजन के लिए स्वजनों द्वारा गाए जाते हैं। दूसरे वे जिन्हें बच्चे स्वयं गाकर अपना मनोरंजन करते हैं। उपर्युक्त गीत में अलग-अलग भागों में कुछ और छंद भी जुड़े हैं और अपने-अपने क्षेत्र के हिसाब से इसमें घट-बढ़ देखने को मिलती है।

## घुगूती बासूती

घुगूती बासूती, मामा कख छ ? मालकोटी,  
क्या लाली ? दूद-भात्ति ।  
कू खालो ? दिदा खालो ।  
दिदा को जुट्टो कू खालो ? बुबा खालो ।  
बुबा को जुट्टो कू खालो ? ब्वै खाली ।  
ब्वै को जुट्टो कू खालो ? दीदी खाली ।  
दीदी को जुट्टो कू खालो ?  
दीदी को जुट्टो जीजा खालो ।

**भावार्थ**—ये दूसरी कोटि का बाल मनोरंजक गीत है। इन गीतों में हास्य का पुट तो रहता ही है साथ ही बच्चों के जीवन पर पड़ने वाली घरेलू जीवन की प्रतिच्छाया भी इनमें दिखाई देती है।

## कमलू जवान ह्वे ग्याई (बद्दी गीत)

मेरी कमलू जवान ह्वे ग्याई ।  
मेरी कमलू की शादी के दीणा ॥  
म्यारा हाथ ज्वण्यां छीं पिताजी ।  
मेरी शादी नि कन्नी पहाड़ मा ॥  
पहाड़ी लोग खराब रंदीना ।  
छंच्या पळ्यो मां लूण खंदीना ॥  
कनक्के कि मण्डूवा पिसूलू ॥  
म्यारा हाथ ज्वण्यां छी पिताजी ।  
मेरी शादी नि कन्नी पहाड़ मा ॥  
म्यारा सैण्डल राड़ला राड़ मा ।  
म्यारा हाथ ज्वण्यां छीं पिताजी ।  
मेरी शादी नि कन्नी पहाड़ मा ॥

**भावार्थ**—उत्तराखंड की लोक-संस्कृति पर पलायन का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। रोजी-रोटी की तलाश में अधिकांश समाज मैदानों में जाकर बस गया है। किंतु प्रवास में रहते हुए भी उनका मन पहाड़ों से किसी-न-किसी रूप में जुड़ा रहा। यह विडंबना ही है कि धीरे-धीरे नई पीढ़ी इससे कटती जा रही है। प्रस्तुत लोकगीत में ऐसी ही एक युवती का अपने माता-पिता (जो उसका विवाह पहाड़ में करना चाहते हैं) से आग्रह है कि वे उसका विवाह पहाड़ में न करें और वह इसके लिए वहां की आलोचना करती है, जो कि हास्यास्पद है। पहाड़ी लोग अच्छे नहीं होते, मट्टे की बनी खीर (छंच्या पळ्यो—जो मूलतः नमकीन ही बनाया जाता है) में नमक मिलाकर खाते हैं। मैं कैसे सुबह-सवेरे उठूंगी और घर-बार का काम करूंगी। मेरी सैण्डल वहां पहाड़ में फिसलेंगी। पिताजी मेरी शादी वहां पहाड़ में मत करना।

## भारत को गीत जी (सामयिक लोकगीत)

सूणा-सूणा भाई बन्दो, भारत को गीत जी ।  
कना-कना हाल ह्वेन, कन ऐन रीत जी ।  
छै-छै हजारिका भेंसा ह्वेन, दूध नी माणी जी ।  
हौर चीज फुंडू फूका, चा जरुर पीण जी ।  
डेरा मूं खंदेर आयूं च, बीस रूप्या खांद रोज जी ।  
सौदा खाण कू! रूप्या नी न, कन आये अकरी जी ।

**भावार्थ**— गढ़वाळ में सामयिक विषयों के गीत भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। एक समय था जब भारतीय जनमानस एक नये भारत का स्वप्न देख रहा था, लेकिन उसके माध्यम से जिस सुख की कामना जनता ने की थी वह सुख उसे प्राप्त नहीं हुआ। वह और भी दुखी हो गये। महंगाई ने जन-जीवन को तोड़ दिया। इस लोकगीत पर नजर डालें तो ये जब जनमानस के कंठ से उभरा था, तब जितना सामयिक रहा होगा उतना ही सामयिक ये आज भी नजर आता है। हे भाई बन्धुओं ! भारत का गीत सुनो। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तो हमारे हाल और भी बुरे हो गये हैं। अनोखे रीति-रिवाज हो गये हैं। वर्तमान रीति-रिवाज में जीना मुश्किल हो गया है। महंगाई तो आसमान को छू रही है। छः छः हजार में भेंसे मिल रही हैं। परंतु उनसे आधा किलो दूध भी नहीं मिल पा रहा है। ऐसा रिवाज हो गया है कि लोग और चीजें भले ही छोड़ दें परंतु चाय पीने की आदत नहीं छोड़ पा रहे हैं। घर में मेहमान आया हुआ है उस पर बीस रूपया प्रतिदिन खर्च हो रहा है। अब तो सामान खरीदने के लिए भी रुपये नहीं हैं। कैसी महंगाई का समय आ गया है? जीवन-निर्वाह करना कठिन हो गया है।

## वीर सुमन

म्यारा वीर सुमन भैजी! बड़ो काम कै गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

जब प्राण त्यारो निकले तिन मन मा भांपी छौ,  
भारत छ भारत्यूं को तब बैरिक कांपि छौ  
हमतेँ बि अगन्या बढणा को सांसू देगे तू  
अजादी का रणमा बलिदान ह्वे गे जू।

तेरी बादुरी की दुनिया यो गीत गाणी छ  
मौत नीचा तेरो यो अमर नाम छ  
दगड़ा देश-गौं को नौं बी अमर कै गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

जैँ जगा मा त्यारा ऊ आंसू टपकिनी  
वीर्यीं जगा मा अजादी का बीज उपजिनी  
अंग्रेजू तैँ खन्याण को जोश दे गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

धरमी मां जबतेँ राली पुगड्यूं मा हरियाली  
तबतेँ दुनियां त्यारा गुण-गीत गांदी राली  
अपणा ल्वे ना गुलामी को रंग ध्वे गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

पन्द्रा अगस्तै खुशी नी या अजादी का मान की  
समलौण छ या त्वे जना वीरू का बलिदान की  
बरसू की गुलामी का जलुड़ा हलै गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

त्वे तैं झुरैं-झुरैं की जब प्राण त्यारो गाया  
त्वे से बिंडी पीड़ा देका तैं प्यारा ह्याया  
माता न बोले बेटा! भैयूं तैं बणैं गे तू  
अजादी का रण मा बलिदान ह्वे गे जू।

**भावार्थ—** 1942 में जब भारत छोड़ो आंदोलन की आग हर प्रान्त में तेजी से फैल रही थी उस वक्त उत्तराखंड भी उससे अछूता नहीं था। उत्तराखंड के वीर शहीद श्रीदेव सुमन ने टिहरी रियासत की जनविरोधी राजसत्ता के खिलाफ आवाज उठाई थी और 84 दिन का लंबा अनशन किया था। अनशन के दौरान इनकी हालत बिगड़ती गई और जेल के अत्याचार भी बढ़ते गए। इनके सारे शरीर में खुशकी फैल गई और ये पानी-पानी चिल्लाते रहे लेकिन उन्हें पानी नहीं दिया जाता था। 25 जुलाई 1944 को इस अमर सेनानी ने अपने देश, अपने आदर्श के लिए प्राणों की आहुति दे दी। इसी रात को जेल प्रशासन ने इनकी लाश एक कंबल में लपेट कर भागीरथी और भिलंगना के संगम से नीचे तेज प्रवाह में फेंक दी थी।

## सतपुली

बीस सौ आठ भादौ का मास,  
सतपुली मोटर बागिन खास ।  
औडर ऐगि कि जांच होली,  
पुर्जा देखण कु इंजन खोली ।  
अपणी मोटर साथ मा ल्हावा,  
भोळ होलि जांच अब सेई जावा ।  
से जोला भै बन्धो अब बरखा ऐगे,  
गिड़-गिड़ थर-थर सुणेण लैगे ।  
सूबे उठीक जब ऐन भैर,  
बगिक ऐन साँदण खैर ।  
गाड़ी कि भीतर अब ढुंगा भरा,  
होई जाली सोंगुडी धीरज धरा ।  
गाड़ी कि छत मा अब पाणी ऐगि,  
जिकुड़ी डम-डम कांपण लैगि ।  
अपणा बचण कु पीपल पकड़ी,  
स्यु पापी पीपल स्युं जड़ा उखड़ी ।  
दगड़ा का भै बंधु तुम घर जाला,  
सतपुली का हाल जिया ब्वै मू लाला ।  
शिवनंदी कु थयो गोवर्धन दास,  
ढाई हजार रुपया थै जैका पास ।  
डाखानो छोड़िक तीन गाड़ी लीनी,  
तैं पापी गाड़ीन कनु धोखा दिनी ।  
हे पापी नयार कमाए त्वैकु,  
मंगसीर का मैना ब्यो थयो मैकु ।  
काखड़ी मुंगरी बुति थैन ब्वैन,  
राळि लगीं होलि नि खाई मैन ।  
जिया ब्वैकू बोलिन नि रोण मैकु,  
आंख्यौंन फूट्ण कैन देण त्वैकु ।

**भावार्थ**—ये लोकगीत गढ़वाळ के पौड़ी जिले के सतपुली क्षेत्र में आई भयंकर बाढ़ (तकरीबन 60 साल पहले—विक्रम संवत् 2008 के भाद्रमास) के समय का है। इसके चश्मदीद गवाह आज भी विद्यमान हैं। सतपुली पहाड़ी कस्बा है जहां से पूरबी नयार नामक नदी गुजरती है। यह ऐसी नदी है जिसमें बिना बारिश की बाढ़ आ जाती है। इस लोकगीत में यूं तो एक आदमी विशेष का वर्णन है जिसकी मोटर इस बाढ़ में बह गई थी, लेकिन इस बाढ़ की भयंकर मार से सभी लोग बुरी तरह प्रभावित हुए थे। विक्रम संवत् 2008 भाद्रमास में सतपुली में मोटर बही। आर्डर आया कि अपनी मोटर की जांच कराओ। इंजन खोलकर पुर्जे दिखलाओ। अपनी मोटर को साथ में लाओ। कल होगी जाँच अभी सो जाओ। भाई-बंधु सो गये तो वर्षा ऐसी आई, गड़गड़ाना और थरथराना सुनाई देने लगा। सुबह उठकर जब बाहर आए तो देखा कि नदी में पेड़ बहकर आ रहे हैं। हाँक लगाई कि गाड़ियों के भीतर पत्थर भरो, बचाव हो जायेगा, धीरज धरो। पर गाड़ी की छत तक पानी आ गया। जिगर काँपने लगा, तो अपने को बचाने पीपल के पेड़ को डाली थामी, पर वो पीपल का पेड़ तो जड़ समेत उखड़ गया। साथी भाई तुम जब घर जाओगे और सतपुली के हाल अपनी माँ को सुनाओगे। बताना कि शिवानंदी का गोवर्धन भी वहाँ था, जिसके पास दो हजार रुपये थे। डाक खाने की नौकरी छोड़ उसने गाड़ी ली तो उस पापी गाड़ी ने उसे धोखा दे दिया। हे पापी नयार क्या मैंने तेरे लिए कमाया। मंगशीर के महीने में मेरा ब्याह तय था। माँ ने खेतों में जो बोया था उनको खाने वाला भी नहीं रहा। माँ की आँखें चली गयीं अब तेरे को कौन देगा।

## गौं की सारी

पाकी गाया गौं की सारी  
पड़ीगे सदयूं की झड़ाई मेरी कमला  
भेंटी जा तू आज मी तैं,  
हिमालै जांदू दौं लड़ाई, मेरी कमला  
द्वी मैना वी नी ह्याया,  
पैरियां नाका मां नथूली, मेरा सिपैजी  
कनकै जी रौंलो मी  
घर-मा यखुलि-यखुलि, मेरा सिपैजी ।  
कनकै जी रौंलो मी,  
घर-मा यखुलि-यखुलि, मेरा सिपैजी ।  
बाली-कुंगली मुखड़ी को,  
हिमाली रंग न सुखाई, मेरी कमला  
धरम म्यरो आज यो ही छ,  
छऊंमी देश को सिपाई, मेरी कमला  
जब भारी खुद लगली,  
दगड्या ज्युकुड़ी माँ मेरी, मेरा सिपैजी  
खड़ी रौंलो यीं यीं जगा,  
तुमारो बाटो हेरी-हेरी, मेरा सिपैजी  
बगत नी छ रोण को,  
खिलैदे मुखड़ी को रंग, मेरी कमला  
हैंसी-खुशी जाणीदे मी,  
निथर वीरता-भंग, मेरी कमला  
जावा-जावा मेरा सिपैजी  
लगै की पैटदी पिठाई, मेरा सिपैजी  
आज हमारो धर्म यी छ,  
छयां तुम देश का सिपाई, मेरा सिपैजी  
छऊं मी देश का सिपाई, मेरी कमला  
छयां तुम देश का सिपाई, मेरा सिपैजी ।

**भावार्थ**—कभी-कभी ऐसी घटनाएं घट जाती हैं कि लोकमानस उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। ऐसी घटनाओं में सीमा पर लड़ रहे युवकों की अचानक मौत हो जाना भी है। ऐसी स्थिति में संपूर्ण परिवार निःसहाय हो जाते हैं। और जब कमाने वाला ही नहीं रहता तो उस परिवार को दुर्दशा में दिन गुजारने के लिए मजबूर हो जाना पड़ता है। इस गीत में एक स्त्री कमला के माध्यम से संपूर्ण उत्तराखंड के दर्द को उकेरा गया है। कमला की शादी हुए अभी दो महीने ही बीते हैं और उसके पति को लड़ाई के मैदान में जाने का आदेश मिला है। ऐसे में कमला को उसका अंधकारमय भविष्य नजर आने लगता है और वह सोचती है कि यदि उसका पति युद्ध में शहीद हो गया तो उसका क्या होगा? किंतु उत्तराखंड की अन्य बहादुर बेटियों की तरह अंत में वह अपने पति को देश-सेवा के लिए हंसते-हंसते भेज देती है।

## सरसू

सरसू भैया रे तड़ाक न मारी।  
बूणी जाला मंदरा।  
सरसू ल खयलिन बुढड़ियूं का अंदड़ा ॥

सरसू भैया रे तड़ाक न मारी।  
कुटवा की लाळी।  
सरसू ल खयाल हाय मेरी स्याळी ॥

सरसू भैया रे तड़ाक न मारी।  
पाकी जाली ऊमी पाकी जाली ऊमी।  
सरसू का डारल गुठ्यार स्यूं मी ॥

सरसू भैया रे तड़ाक न मारी।  
पुंगड़ी बई छा पुंगड़ी बई छा।  
हाथ ज्वड्यां छन त्वेकु।  
आज मेरी सासू अईछा ॥

सरसू भैया रे तड़ाक न मारी।

**भावार्थ**—यह एक हास्य-लोकगीत है। प्रस्तुत हास्य-लोकगीत में गांवों में सरसू (खटमल) ऐसे फैले कि उन्होंने लोगों का सोना हरा मार कर दिया। खटमल को संबोधित कर पुरुष कहता है कि सरसू भाई कम-से-कम आज तो डंक मत मारना। तुमने तो गांव में बूढ़ी औरतों की आंते तक चूस ली हैं। तुमने मेरी साली को भी बहुत परेशान किया। मैं भी तुम्हारे डर के मारे भीतर की जगह बाहर आंगन में सो रहा हूँ। हाथ जोड़ कर कहता हूँ कम-से-कम आज लाज रखना। आज मेरी सासू हमारे घर आई हुई हैं, उसे मत काटना।

## पटखाई में छूड़ा

1.

मोर की चार न झुर्या, किमलों की चार न मर्या  
कुकरों की चार न फिर्या, स्यालू की चार न डर्या  
फूलों से हंसणो सीखा, शेर स चलण् सीखा।

2.

फूल की सी महक देणी, सोना की सी लचक लेणी  
बरख की सी झमक देणी, प्रेमी सी झलक देणी  
लहरूँ सी लहराणो सीखा, सागर की गैराई देखा।

**भावार्थ**— गढ़वाळी गीतों में 'पटखाई में छूड़ा' एक ऐसी शैली है जिसमें लंबी लय के लेकिन छोटे आकार के गीत होते हैं। जीवन के सत्य को अनुभव के आधार पर चित्रित करना इस शैली की मुख्य विशेषता है। मुख्यतः मानवीय आचरण के पक्षों का नीतिमूलक रूप प्रस्तुत करना ऐसे गीतों का मुख्य विषय है। ऐसे ही दो लोकगीत ऊपर प्रस्तुत किए गए हैं।

# संदर्भ सूची

रैबार, गोविंद सिंह चातक

गढ़वाळ के लोकगीत, गोविंद सिंह चातक

गढ़वाळी जन मानस, डॉ. शिवानन्द नौटियाल

म्यारा गीत, जीत सिंह नेगी

भारत सरकार के जनगणना विभाग 1961 वॉल्यूम XV, उत्तर प्रदेश, भाग VI के ग्राम्य सर्वेक्षण, ग्राम थापली, तहसील पौड़ी, जनपद गढ़वाल के पृष्ठ 48 पर सामयिक सर्वप्रिय लोकगीतों में श्री नेगी के गीत — तू हेली जंचि डांड्यू मा बीरा घस्यारी क भेस मा (देखें पृष्ठ 16)— का विशेष उल्लेख किया गया है।

गढ़वाळ गरिमा, चंद्रपाल सिंह रावत

<http://www.apnauttarakhand.com>

<http://www.hillwani.com>

<http://www.kavitakosh.org>

<http://www.merapahadforum.com>

<http://www.nainitalsamachar.in/garhwali-folksong-on-satpuli-tragedy/>

<http://blogs.rediff.com/devbhoomiuttarakhand>

<http://www.swargbhoomi.com>

***isd* इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस, 62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका, नई दिल्ली-110067

टेलीफोन 011-46025219, टैलीफैक्स 011-26177904

ईमेल : [notowar.isd@gmail.com](mailto:notowar.isd@gmail.com), वेबसाइट : [isd.net.in](http://isd.net.in)

केवल सीमित वितरण के लिए

---